शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक २३ : नई दिल्ली : ९-१५ सितम्बर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५२ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी ९२, सर्व १४४, सानंद जसोल में चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। श्रद्धालुओं के आवागमन का क्रम निरंतर जारी है। साध्वी वैराग्यश्रीजी का तिविहार संथारा गतिमान और उनकी परिणामधारा सतत् प्रवर्धमान है। उन्हें प्रतिदिन प्रातः परमपूज्य गुरुदेवश्री के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। समय-समय पर वर्षा हो जाने से मौसम काफी अनुकूल है।

२१०वें भिक्षु चरमोत्सव के पावन अवसर पर
परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा समुच्चारित गीत

बाबा भिक्षुस्वामी की शुभ स्तवना करते हैं।
जीवन-गौरव गाथा को श्रद्धा से स्मरते हैं।।

आध्यात्मिक तेज तुम्हारा, किस कारण से निखरा?
इन्द्रियनिग्रह - आराधक, वर वर्चस् वरते हैं।।१।।

वर्षों तक स्वामीजी ने घनघोर विरोध सहा।
चोटें सहकर ही हीरे हर बार निखरते हैं।।२।।

निर्ग्रंथ भाव से जो की, ग्रंथों की संरचना।
पावन ज्ञानामृत झरने, उसमें से झरते हैं।।३।।

सिरियारी में विभुवर ने अनशन स्वीकार किया।
संयम से 'महाश्रमण' सब, भवसागर तरते हैं।
जसवल में चरम महोत्सव श्रीभिक्षु उतरते हैं।।
जसवल में चित्तपटल पर श्रीभिक्षु उभरते हैं।।४।।

लय : प्रभु पार्श्वदेव चरणों में.....।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

तेजस्वी आचार्य थे पूज्य डालगणी

२८ अगस्त। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा--'जैन शासन में आचार्य का सर्वोच्च और महत्त्वपूर्ण स्थान है। आचार्य तीर्थंकर के प्रतिनिधि और धर्मसंघ की बागडोर संभालने वाले होते हैं। तेरापंथ के सातवें आचार्य डालगणी एक तेजस्वी आचार्य थे। बचपन में ही उन्होंने पितृवियोग को झेला। बालक डालचन्द के भीतर वैराग्य का अंकुर प्रस्फुटित हुआ और इन्दोर में मुनि हीरालालजी स्वामी के द्वारा उन्होंने दीक्षा ग्रहण की। जयाचार्य के शासनकाल में वे दीक्षित हुए। वे सिद्धान्तवादी और फक्कड़ प्रकृति के संत थे। मुनि कालूजी स्वामी (रेलमगरा) का नाम धर्मसंघ में विशिष्टता को प्राप्त है। माणकगणी के स्वर्गवास के बाद बनी विषम परिस्थिति के बीच अपनी सूझबूझ से उन्होंने डालगणी का मनोनयन लाडनूं के तखतमलजी फूलफगर की हवेली में किया। धर्मसंघ को डालगणी का बहुत बड़ा अवदान यह रहा है कि उन्होंने मुनि कालूजी (छापर) जैसे योग्य व्यक्ति को अपना उत्तराधिकारी बनाया। डालगणी का जीवन एवं उनका अनुशासन इतिहास का विरल पृष्ठ है।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'आज के दिन डालगणी ने महाप्रयाण किया था। उनके महाप्रयाण की शताब्दी अचार्य महाप्रज्ञजी की सन्निधि में मनाई गई थी। आज के दिन ही परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में मुझे अमल-धवल चादर ओढ़ाई। उन्होंने मेरे पर विश्वास किया। उनकी पावन प्रेरणा मुझे मिलती रही। तेरापंथ धर्मसंघ के विकास में मेरा योगदान बना रहे।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में पूज्य डालगणी के दबंग, प्रभावक, स्पष्टवादी, कुशाग्र बुद्धि, प्रभावशाली प्रवचनशैली आदि अनेक गुणों का उल्लेख करते हुए उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। शासनश्री साध्वी यशोधराजी ने अपने विचार रखे। मुनि जिनेशकुमारजी ने तप के संदर्भ में भावाभिव्यक्ति दी। सोलापुर संघ की ओर से डा.शान्तिलाल सेठिया, मलनाड़ (कर्नाटक) क्षेत्रीय तेरापंथ समिति के अध्यक्ष श्री फूलचन्द तातेड़ ने पूज्यप्रवर से अपने क्षेत्र में पधारने की प्रार्थना की। धुरी (पंजाब) नगरपालिकाध्यक्ष व पंजाब प्रान्तीय तेरापंथी सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री रघुवीरचन्द थानेदार ने अपने प्रासंगिक विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया। आज नवकार विद्या मंदिर में मुनि मदनकुमारजी का 'अणुव्रत और नशामुक्ति' पर वक्तव्य हुआ।

२१०वां आचार्य भिक्षु चरमोत्सव

२९ अगस्त। भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी। २१०वें आचार्य भिक्षु चरमोत्सव की समायोजना। प्रातःकालीन कार्यक्रम में साध्वी जिनरेखाजी, साध्वी मार्दवयशाजी, साध्वी जयंतमालाजी ने अपने गीतों के माध्यम से आचार्य भिक्षु के प्रति अपने भाव सुमन अर्पित किए। शासनश्री मुनि किशनलालजी और मुनि रजनीशकुमारजी ने महामना आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व पर भावाभिव्यक्ति दी। डाकलिया बन्धुओं ने भावपूर्ण गीत का संगान किया। श्रद्धानिष्ठ संगायक श्री कमल सेठिया ने संगीतमय प्रस्तुति के उपरान्त 'ज्योतिर्मय महाप्रज्ञ' नामक अपनी नवीन सीडी लोकार्पित की। प्रस्तुत सीडी परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की स्मृति में मुनिवृन्द द्वारा रचित गीतों का संग्रह है। श्रीमती शोभा जैन ने गीत का संगान करते हुए अपनी सीडी 'मेरे सांवरा' का विमोचन किया। प्रस्तुत सीडी में संगायिका ने आचार्य भिक्षु की अभ्यर्थना में स्वरचित गीतों को स्वर दिया है।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'आचार्य भिक्षु का व्यक्तित्व विलक्षण था। वे क्रान्तद्रष्टा थे, भविष्यद्रष्टा थे, आगमज्ञ थे, संगीतज्ञ थे, परीक्षक और निरीक्षक थे, इसके साथ-साथ समीक्षक भी थे। वे हर तत्त्व को समीक्षा के आधार पर स्वीकार करते थे। अपनी विलक्षण मेधा के आधार पर उन्होंने 'तेरापंथ' नाम का विश्लेषण किया। स्वामीजी द्वारा प्रस्तुत साधना के पथ पर हम आगे बढ़ते रहें।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज संपूर्ण धर्मसंघ आचार्य भिक्षु का चरमोत्सव मना रहा है। आचार्य भिक्षु ने अपने जीवन में पग-पग पर विरोधों को झेला। वे सत्य के उपासक थे। भगवान महावीर की वाणी के प्रति उनमें समर्पण का भाव था। वे आगमों के गूढ़ रहस्यों को पकड़ते। जिस पथ पर वे चले, वह तेरापंथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने जो सिद्धान्त और अनुशासन के सूत्र दिए, मर्यादाएं दीं, उन्हें उत्तरवर्ती आचार्यों ने और परिपुष्ट बनाया। ऐसा कहा जा सकता है कि संघ और संघपति के प्रति समर्पित रहनेवाले व्यक्ति का स्वामीजी प्रतिपल सहयोग करते हैं।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा--' तेरापंथ प्रणेता महामना आचार्य भिक्षु की जीवन-पोथी के जितने पृष्ठ हैं, हर पृष्ठ में जितने पेराग्राफ हैं, उतनी ही व्याख्याएं आचार्य भिक्षु की हो सकती हैं। उन्होंने विलक्षण जीवन जीया, विलक्षण कार्य किए तथा विलक्षण साधना के आधार पर आगे बढ़ते गए। वे एक क्रान्तिकारी महापुरुष थे। उनमें आत्मज्ञान की गहरी तड़प थी। उनका जीवन हमारे लिए आदर्श है। उनके पदचिह्नों पर चलकर हम अपने जीवन का उत्थान कर सकते हैं।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'आज तेरापंथ के प्रवर्तक महामना परमपूज्य आचार्य भिक्षु का महाप्रयाण दिवस है। शुक्ल पक्ष में उनके जीवन की अनेक घटनाएं घटित हुईं। उनका जन्म, अभिनिष्क्रमण, भावदीक्षा, अनशन तथा महाप्रयाण--सभी शुक्लपक्ष में हुए। ऐसा लगता है कि उन्होंने पूर्वजन्म में भी साधना की होगी। मोहनीय कर्म के विशिष्ट क्षयोपशम से उनके मन में वैराग्य भावना जागृत हुई। गृहस्थावस्था में उन्होंने विवाह कर दाम्पत्य जीवन स्वीकार किया, किन्तु नियतिवश पत्नी का देहान्त हो गया। ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्य भिक्षु में बालावस्था से ही विशिष्ट प्रतिभा थी। ज्ञानावरणीय कर्म का विशेष क्षयोपशम था। वे तर्कशील और अध्ययनशील थे। अपनी जिज्ञासाओं का गुरु के उत्तरों से उन्हें पूरा समाधान नहीं मिला। इस असमाधान ने उनके सामने अभिनिष्क्रमण का द्वार खोल दिया। लेकिन अभिनिष्क्रमण के बाद उन पर जैसे विरोधों का पहाड़ टूट पड़ा। उन्होंने धैर्य के साथ उन विरोधों को सहा। उनमें पौरुष था।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'आचार्य भिक्षु को समझने के लिए उनके सिद्धान्तों को समझना जरूरी है। उन्होंने दान-दया के संदर्भ में लौकिक और लोकोत्तर का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। उस महापुरुष का जीवन हम सबको पावन प्रतिबोध देता रहे।' पूज्यवर ने इस अवसर पर स्वरचित गीत का संगान किया, जो इसी विज्ञप्ति के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित है। आचार्यवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त हाजरी का संक्षिप्त वाचन किया।

पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश के लिए समुद्यत बालिका प्रेक्षा के पिता श्री जितेन्द्र भंसाली ने कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त किए तथा बालिका प्रेक्षा ने मंगलपाठ का श्रवण किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया। आज मध्याह्न में राजस्थान के पूर्व सार्वजनिक निर्माण मंत्री श्री प्रमोद जैन भाया ने पूज्य आचार्यवर के दर्शन किए और विविध विषयों पर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

चरणस्पर्श के संदर्भ में

पूज्यप्रवर ने २१०वें आचार्य भिक्षु चरमोत्सव के अवसर पर अपने प्रवचन के पश्चात चरणस्पर्श के संदर्भ में वात्सल्यपूरित वाणी में फरमाया--'भाई लोग मुझे वंदना करते हैं, चरणस्पर्श करते हैं। उस संदर्भ में थोड़ी-सी सीमा बता रहा हूं कि जब मैं चल रहा हूं, जब खड़ा रहूं और जब लेट जाऊं, उस समय यथासंभव चरणस्पर्श न करने का ध्यान रखें।'

तपोमूर्ति संबोधन

३० अगस्त। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि पृथ्वीराजजी (जसोल) के इकतीस की तपस्या के उपलक्ष्य में अभिनंदन का उपक्रम रहा। उनके संसारपक्षीय पारिवारिकजनों ने गीत का संगान किया। श्रीमती रीता

मांडोत और कुमारपाल संकलेचा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मुनि जिनेशकुमारजी ने मुनिश्री की तपस्या के प्रति अपनी मंगलभावना व्यक्त की। मुनि दिनेशकुमारजी आदि मुनिवृन्द ने गीत के द्वारा तप की अनुमोदना की। साध्वी तरुणयशाजी ने अपने संसारपक्षीय पिता की तपस्या के प्रति अपने भावों को अभिव्यक्ति दी।

मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'तपस्या आत्मशोधन का महान पथ है। मुनि पृथ्वीराजजी का तपस्या का क्रम चलता रहे और वे धर्मसंघ की गरिमा को वृद्धिंगत करते रहें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में मोक्ष और मोक्ष मार्ग की विवेचना करते हुए तपस्या के लाभ की चर्चा की। पूज्यप्रवर ने मुनि पृथ्वीराजजी की तपस्या के संदर्भ में कहा--'जसोल में तपस्या का अच्छा रंग लगा है। कितने ही लोगों ने इस महायज्ञ में अपनी ओर से आहुतियां दी हैं। मुनि पृथ्वीराजजी (जसोल) तपस्या करते रहे हैं। इस बार इन्होंने इकतीस दिन की तपस्या की है। तपस्या के इकतीसवें दिन खड़े होकर वक्तव्य देना विशेष पराक्रम की बात है। इन्होंने पहले भी अच्छी तपस्याएं की हैं। इनकी तपस्या का भी अपना इतिहास है। धर्मसंघ में ऐसे तपस्वी संतों का होना अच्छी बात है। आज इस अवसर पर मैं इन्हें **तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराजजी (जसोल)** के रूप में स्वीकार करता हूं। ये आत्मकल्याण की दिशा में उत्तरोत्तर बढ़ते रहें।'

पूज्यवर के प्रवचन के पश्चात अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास द्वारा समायोजित अखिल भारतीय नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता के लिए समागत जवाहर नवोदय विद्यालय, पचपदरा तथा बक्सी पब्लिक स्कूल, कोटा के विद्यार्थियों ने पृथक्-पृथक् गीत प्रस्तुत किए। सिंघानिया पब्लिक स्कूल, कांकरोली की छात्रा मनस्वी व्यास ने अणुव्रत गीत को सुमधुर प्रस्तुति दी। अ.भा.अणुव्रत न्यास के मुख्य न्यासी श्री धनराजजी बोथरा आदि कार्यकर्ताओं ने विद्यार्थियों द्वारा लिखित चयनित निबन्धों का संकलन 'युगीन समस्याओं का समाधान : अणुव्रत' तथा 'विश्वशान्ति व अहिंसा' नामक पुस्तक पूज्यवर को भेंट की। श्री प्रमोद घोड़ावत ने कार्यक्रम का आंशिक संचालन करते हुए प्रतियोगिता के विषय में अवगति दी। पूज्यवर ने उपहृत पुस्तकों के संदर्भ में कहा--'पुस्तकें विद्यार्थियों के विकास की दृष्टि से और पाठकों को प्रेरणा देने में सहायक बन सकेंगी। अणुव्रत न्यास का यह प्रयास जनकल्याणकारी बने।'

असाढ़ा निवासी श्रीमती तुलसीदेवी जवाहरलाल भंसाली की इकतीस दिन की तपस्या के उपलक्ष्य में उनके परिवार की ओर से श्री जवाहर भंसाली एवं श्रीमती मीना भंसाली ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी।

बाड़मेर के पूर्व सांसद श्री मानवेन्द्र सिंह ने आज पूज्यवर के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। वे प्रातःकालीन कार्यक्रम में भी उपस्थित रहे। चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतम सालेचा ने कार्यक्रम में उनका परिचय प्रस्तुत किया।

सहनेवाला बनता है महान

३१ अगस्त। प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्य भिक्षु चरमोत्सव का अवशिष्ट उपक्रम रहा। साध्वी तितिक्षाश्रीजी, साध्वी महिमाश्रीजी, साध्वी संकल्पप्रभाजी, साध्वी कार्तिकयशाजी, साध्वी कमलप्रभाजी, मुनि विजयकुमारजी, तेरापंथ महिला मंडल जसोल तथा बेंगलुरु से समागत सुश्री हेमलता और सोनल पीपाड़ा ने महामना आचार्य भिक्षु के प्रति विविध रूपों में अपनी श्रद्धा प्रणति अर्पित की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति के जीवन में प्रिय और अप्रिय स्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। सामान्यतया व्यक्ति अनुकूलता में खुश और प्रतिकूलता में दुःखी बन जाता है। लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण--आदि विभिन्न स्थितियों में सम रहनेवाला व्यक्ति साधना-पथ पर आगे बढ़ सकता है। भारतवर्ष में अनेक ऋषि-महर्षि हुए हैं। उन्होंने तप तपा, जप जपा, साधना की और अध्यात्म के शिखर पर आरूढ़ हो गए। जो सहता है, वह महान होता है। साधक का लक्षण है--कम खाना, गम खाना और नम जाना। हमारे भीतर क्षमा और समत्व का विकास हो।'

पूज्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात असाढ़ा निवासी श्री सोहनराज भंसाली की इकतीस और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सवितादेवी भंसाली के तीस दिन की तपस्या के उपलक्ष्य में सुश्री देवकन्या भंसाली एवं श्री वीरेन्द्र भंसाली ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। सुश्री प्रवीणा बुरड़ ने गीत का संगान किया। भंसाली परिवार की बहुओं ने गीत के द्वारा तप की अनुमोदना की।

कार्यक्रम में किशनगंज (बिहार) से मर्यादा महोत्सव की प्रार्थना के साथ समागत संघ की ओर से सामूहिक गीत के द्वारा भावाभिव्यक्ति दी गई। श्री कमल छोरिया ने अपने विचार व्यक्त किए। समणी विनयप्रज्ञाजी ने भी किशनगंजवासियों की प्रार्थना के संदर्भ में अपने भावोद्‌गार व्यक्त किए। अ.भा.तेयुप के तत्त्वावधान में १७ सितम्बर को जसोल में समायोजित विशाल रक्तदान शिविर की सामग्री स्थानीय तेयुप द्वारा विमोचित की गई। आज सुआदेवी भंसाली राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में 'अहिंसा और नशामुक्ति' विषय पर मुनि मदनकुमारजी का वक्तव्य हुआ।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं मुख्य न्यासी

आज रात्रि में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की वार्षिक साधारण सभा समायोजित हुई। इस सभा में निर्वाचन अधिकारी श्री राजेन्द्र सेठिया एवं श्री सुशील राखेचा ने आगामी कार्यकाल के लिए प्राप्त नामांकन पत्रों के आधार पर राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में श्री संजय धारीवाल(बेंगलुरु) तथा मुख्य न्यासी के रूप में श्री इन्द्रचन्द दुधोड़िया (बेंगलुरु) के निर्वाचन की घोषणा की। अन्य मनोनीत न्यासीगण इस प्रकार हैं--श्री लालचन्द सिंघी (गुवाहाटी), श्री प्रकाशचन्द बैद (कोलकाता), श्री विमल घोड़ावत (इन्दोर), श्री राकेश बरड़िया (जयपुर), श्री ललित डांगी (मुम्बई), श्री महेन्द्र दूगड़ (दिल्ली), श्री धर्मचन्द सुराणा (मुम्बई)

अग्रिम दिन प्रातःकालीन कार्यक्रम में नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री संजय धारीवाल ने अन्य पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की, जो इस प्रकार हैं--उपाध्यक्ष- श्री प्रकाशचन्द मालू (कोलकाता), श्री महेन्द्र दक (बेंगलुरु), श्री कैलाश बाफणा (मुम्बई), श्रीमती जया राखेचा (दिल्ली), श्री कपिल इन्टोदिया (उदयपुर), मंत्री- श्री सलिल लोढ़ा (मुम्बई), सहमंत्री श्री नवीन बागरेचा (भीलवाड़ा) कोषाध्यक्ष--श्री सुशील चोरड़िया (कोलकाता)।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का पांचवां राष्ट्रीय सम्मेलन

१ सितम्बर। परम पावन आचार्यवर की मंगल सन्निधि में आज से तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के पांचवें द्विदिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ। प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री अशोक सुराणा ने गीत का संगान किया। चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति, जसोल के संयोजक श्री गौतमचन्दजी सालेचा ने सम्मेलन के संभागियों के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। फोरम के निवर्तमान अध्यक्ष श्री नरेन्द्र श्यामसुखा ने दो वर्ष की उपलब्धियों को पूज्यवर की कृपा और आशीर्वाद का प्रतिफल बताया। नवमनोनीत अध्यक्ष श्री संजय धारीवाल ने आगामी कार्यकाल के लिए संकल्प अभिव्यक्त करते हुए नवीन कार्यकारिणी की घोषणा की। निवर्तमान अध्यक्ष श्री नरेन्द्र श्यामसुखा ने नवमनोनीत अध्यक्ष, अन्य पदाधिकारियों और कार्यकारिणी के सदस्यों को शपथ ग्रहण करवाई। फोरम की गतिविधियों की जानकारी देने हेतु निर्मित ब्रोसर तथा प्रगति प्रतिवेदन पूज्यवर को उपहृत किया गया।

राजस्थान विधानसभा के उपाध्यक्ष श्री रामनारायण मीणा ने अपने विचार व्यक्त किए। मुनि रजनीशकुमारजी एवं साध्वी शशिप्रभाजी ने सम्मेलन के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्यनियोजिकाजी ने सम्मेलन की थीम 'शेयर, केयर एण्ड सक्सीड' के आधार पर संभागियों को प्रेरणा दी। मंत्री मुनिश्री ने बुद्धिजीवियों को ज्ञान को अपने जीवन व्यवहार में आत्मसात करने हेतु उत्प्रेरित किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा--'तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम में अनेक संभावनाएं निहित हैं। मुट्‌ठी भर संकल्पित लोग भी इतिहास की धारा को बदल सकते हैं। समाज व राष्ट्र

के निर्माण में सफलतापूर्वक आगे बढ़ने वाली प्रतिभाओं की अपेक्षा है। युवा प्रतिभाएं दूरदर्शी योजनाएं बनाएं, युगीन परिस्थितियों पर विचार करें और लक्ष्य की दिशा में अपने सक्षम कदमों को आगे बढ़ाएं।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जो बुद्ध हुए हैं और होंगे, वे शांति की साधना करते हैं। बुद्ध शब्द बुद्धि से जुड़ा हुआ है। बुद्धिमान होना सरल है, किन्तु बुद्ध होना कठिन है। व्यक्ति के पास बुद्धि की शक्ति होती है। उसके द्वारा समस्या को उत्पन्न भी किया जा सकता है और समस्या को समाहित भी किया जा सकता है। बुद्धि के साथ अशुद्धि जुड़ जाती है तो वह शांति का नाश कर सकती है। जबकि शुद्ध बुद्धि कामधेनु के समान कही गई है। बुद्धि अगर शुद्ध नहीं होती है तो अपराधों को भी बढ़ने का अवसर मिल सकता है। अनपढ़ व्यक्ति उतना अपराध नहीं कर सकता, जितना पढ़ा-लिखा व्यक्ति कर सकता है।' पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'साधना और कषायमंदता के द्वारा बुद्धि को शुद्ध बनाया जा सकता है। बुद्धिमान होना जीवन की उपलब्धि है, किन्तु शुद्धिमान होना उससे भी बड़ी उपलब्धि है। बुद्धिमान व्यक्ति शक्तिशाली होते हैं। वे अपनी बुद्धि के द्वारा देश व समाज की पवित्र सेवा कर सकते हैं। बुद्धिमान लोगों में नैतिकनिष्ठा बनी रहे तो अध्यात्म की दृष्टि से अच्छी सफलता प्राप्त की जा सकती है।'

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का पांचवां राष्ट्रीय सम्मेलन प्रारंभ हुआ है। इस फोरम से समाज के कितने-कितने लोग जुड़े हुए हैं। यह एक महत्त्वपूर्ण फोरम है, बुद्धिमान लोगों का फोरम है। उन लोगों में आस्था और धार्मिकता का भाव भी देखा जा सकता है। ऐसे लोगों का संगठित होना समाज के लिए एक अच्छी उपलब्धि है। समाज में प्रबुद्ध लोग पहले भी थे, किन्तु माला का रूप नहीं था। परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के समय वह माला पिरोने का कार्य शुरू हुआ और अब वह माला काफी अंशों में बन गई है, यह अपने आप में विशिष्ट बात है। इस फोरम के माध्यम से कार्य हो रहा है, कार्यकर्ताओं का श्रम नियोजित हो रहा है।

नरेन्द्रजी श्यामसुखा ने अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। अब संजयजी को खूब अच्छा आध्यात्मिक कार्य करना है। इनकी पूरी टीम अपनी पवित्र सेवाएं देती रहे और अपना आध्यात्मिक विकास करती रहे।'

भुवनेश्वर (ओडिसा) से २०१८ के मर्यादा महोत्सव की प्रार्थना के साथ समागत संघ की ओर से वहां के तेरापंथ महिला मंडल और कन्यामंडल ने कार्यक्रम में प्रार्थना गीत प्रस्तुत किया। पचपदरा प्रगति मंडल अहमदाबाद के लगभग पचास व्यक्तियों का संघ पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुआ। कार्यक्रम में श्री डूंगरचन्द बागरेचा ने इस संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। सरदारशहर निवासिनी श्रीमती इलायचीदेवी बोरड़ के दसदिवसीय तिविहार संलेखना सहित अट्ठावन दिन के अनशन की सफल संपन्नता के उपरान्त उनके परिजन आज पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए। कार्यक्रम में श्री मुन्नालाल सेठिया ने इस प्रसंग में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के द्विदिवसीय सम्मेलन में लगभग २२५ व्यक्ति संभागी बने। संभागियों को परम श्रद्धेय आचार्यवर का पावन पाथेय प्राप्त हुआ। सम्मेलन में आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी, मुनि उदितकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि रजनीशकुमारजी एवं मुनि अभिजितकुमारजी के वक्तव्य हुए। मुनि जयकुमारजी ने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। बेंगलुरु से समागत श्री नमीन खींचा, कोलकाता से समागत श्री राज सेठिया, श्री सुरेन्द्र बोरड़ (पटावरी), श्री धनराज बैद, श्री तरीन मेहता, श्री संजय धारीवाल, श्री प्रकाश बैद, श्री कैलाश बाफणा, श्री हेमन्त जैन एवं श्री नवीन बागरेचा के अभिभाषण भी हुए।

फोरम की 'उड़ान' नामक प्रवृत्ति पर श्री प्रदीप चोपड़ा, तेरापंथ कॉमर्स स्टडी सेंटर पर श्री डी.सी. धाड़ेवा, केरियर काउंसलिंग पर श्री प्रकाश नाहर, लीगल सेल पर श्री दिलीप कावड़िया, सिविल सर्विस सेंटर पर जया राखेचा, मेंटरशिप पर श्री संजय जैन, आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चिकित्सालय पर श्री सलिल लोढ़ा ने वक्तव्य प्रस्तुत किया। विभिन्न सत्रों में सम्मेलन के सहसंयोजक श्री विजयराज बडेरा, सहसंयोजक श्री विशाल पटवारी, श्री नितेश चावत, श्री विक्रम चंडालिया एवं श्री अरुण हिरण ने आभार ज्ञापन तथा सम्मेलन संयोजक श्री प्रकाश मालू, श्री सलिल लोढ़ा, श्री नरेन्द्र श्यामसुखा, श्री सुशील चोरड़िया एवं श्री इन्द्रचन्द

दुधोड़िया ने संचालन किया। मेट्रोसिटी में कोलकाता और नॉन मेट्रोसिटी में रायपुर ब्रांच बेस्ट ब्रांच के रूप में चयनित हुई। सम्मेलन के प्रायोजक श्री अशोक कोठारी, श्री ताराचन्द कोठारी और ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज के श्री पंकज ओस्तवाल को स्मृतिचिह्न के द्वारा सम्मानित किया गया।

आज सुआदेवी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में 'अहिंसा और नशामुक्ति' विषय पर मुनि मदनकुमारजी का वक्तव्य रहा।

अनुकंपा अवतार का अनुग्रह

गत दो-तीन दिनों से वातावरण में उमस व्याप्त है। इस कारण बदन पसीने से तरबतर हो जाता है। सायंकालीन प्रतिक्रमण के उपरान्त मुनिवृन्द ने पूज्यवर से सविधि वंदना करते हुए दैवसिक आलोयणा की। तत्पश्चात पूज्यवर ने संतों को फरमाया--'आज से अनिश्चितकाल के लिए एक प्रयोग किया जा रहा है कि सायंकालीन प्रतिक्रमण और अर्हत वंदना सामूहिक रूप में करना अनिवार्य नहीं है। स्थान की अनुकूलता के अनुसार संत किसी भी स्थान पर स्वतंत्र रूप से प्रतिक्रमण और अर्हत वंदना कर सकते हैं।' मुनिवृन्द ने निवेदन किया--'पूज्यवर ने कृपा कराई, किन्तु पूज्यवर की सन्निधि में प्रतिक्रमण और अर्हत वंदना के दौरान हम अनिवार्य रूप से उपस्थित रहें, ऐसा निर्देश दिराएं।' पूज्यवर ने फरमाया--'नहीं, हम जहां बैठते हैं, वहां गर्मी रहती होगी। संतों को कष्ट न हो, इसलिए वे जहां चाहें, वहां प्रतिक्रमण और अर्हत वंदना करें। इच्छानुसार हमारे पास भी कर सकते हैं और अन्य स्थान पर भी कर सकते हैं। मुनिवृन्द के बार-बार निवेदन करने पर भी पूज्यवर ने अपने अनुग्रहपूर्ण निर्देश को यथावत रखा। अनुकंपावतार पूज्य आचार्यवर की करुणा में अभिस्नात मुनिवृन्द आह्लादित थे। ज्ञातव्य है कि पूज्यवर के इस अनुग्रह के बावजूद प्रतिक्रमण और अर्हत् वंदना में संतों की उपस्थिति प्रायः पूर्ववत रहती है।

उदार दृष्टिकोण से सौहार्दभाव में वृद्धि

२ सितम्बर। आज से अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का शुभारंभ। प्रथम दिन 'साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस' के रूप में मनाया गया। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'भारत एक ऐसा देश है, जहां विभिन्न जातियों के विभिन्न भाषाभाषी एवं विभिन्न धर्मों में विश्वास रखनेवाले लोग रहते हैं। विविधता में भी यहां एकता का अनुभव किया जा सकता है। हम सब मानव हैं, हम सब भारतीय हैं--यह एकता का स्वर है। भारत में बहुत से सम्प्रदाय हैं। गुरु परंपरा सम्प्रदाय है। सम्प्रदाय होना बुरा नहीं है। कठिनाई तब खड़ी होती है, जब सम्प्रदायों में वैर-विरोध होता है। धर्म प्रधान है, सम्प्रदाय गौण है। धर्म फल के गूदे के समान और सम्प्रदाय उसके छिलके के समान है। विचारों में सदैव उदारता रखनी चाहिए। उदार दृष्टिकोण से सौहार्दभाव को वृद्धिंगत किया जा सकता है।'

आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'अणुव्रत ने साम्प्रदायिक सौहार्द के द्वारा मानवता की भावना को आगे बढ़ाया। जनता में धार्मिक सहिष्णुता होनी चाहिए। व्यक्ति भगवान की पूजा करे या न करे, किन्तु इंसान से प्रेम व मैत्री भाव जरूर रखे। मैत्री भाव विकसित होना व्यक्ति के जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है। साम्प्रदायिक उन्माद को कभी बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए। शान्ति का वातावरण बनाएं। उदारता व अहिंसा की चेतना का जागरण हो।'

कार्यक्रम का प्रारंभ तारा कोठारी व हिना तातेड़ द्वारा प्रस्तुत अणुव्रत गीत से हुआ। अणुव्रत महासमिति के क्षेत्रीय प्रभारी श्री ओम बांठिया ने स्वागत भाषण किया। जोधपुर के मुफ्ती शेर मोहम्मद कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी अभिभाषण हुआ।

बिहार में मर्यादा महोत्सव की घोषणा

बिहार के किशनगंज, अररिया आदि क्षेत्रों के लोगों ने बिहार को मर्यादा महोत्सव प्रदान करने का भावपूर्ण अनुरोध किया। बिहारवासियों पर अनुग्रह करते हुए **आचार्यप्रवर ने द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अनुकूलता की स्थिति में एक मर्यादा महोत्सव बिहार में करने की घोषणा की।**

'जैन विश्व भारती का इतिहास' पुस्तक के लोकार्पण के क्रम में जैविभा के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने संस्था की विकास गाथा को संक्षेप में प्रस्तुत किया। जैविभा के प्रधान न्यासी श्री रणजीतसिंह कोठारी, तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक श्री कन्हैयालाल छाजेड़ के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। जैविभा के त्रैमासिक बुलेटिन 'कामधेनु' का अंक उपाध्यक्ष श्री बजरंग बोथरा व बसंत पारख ने पूज्यवर को भेंट किया। मुनि मोहजीतकुमारजी द्वारा संकलित और संपादित 'जैन विश्व भारती का इतिहास' श्री सुरेन्द्र चोरड़िया, श्री रणजीत कोठारी एवं मंत्री श्री जितेन्द्र नाहटा ने पूज्यप्रवर को भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन जैविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री सुमेरमल सुराणा ने किया।

राजस्थान के पूर्व वित्तमंत्री श्री माणकचन्द सुराणा आज के कार्यक्रम में उपस्थित थे। उन्होंने अपने भावोद्‌गार व्यक्त किए। श्री सुराणा को पूज्यप्रवर द्वारा पावन पथदर्शन भी प्राप्त हुआ।

केन्द्रीय श्रम मंत्रालय में उपाध्यक्ष श्री प्रेमचन्द जैन, पश्चिम रेलवे के ए.जी.एम.(कॉमर्स) श्री अशोक मेहता तथा राजस्थान सहकारिता विभाग के प्रिंसिपल सेक्रेट्री श्री विपिनचन्द्र शर्मा ने पूज्यवर के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

श्री ताराचन्द रामपुरिया जैन विश्वभारती के अध्यक्ष निर्वाचित

आज सायं जैन विश्वभारती की वार्षिक साधारण सभा में निर्वाचन अधिकारी श्री प्रमोद बैद (कोलकाता) एवं श्री बसंत सुराणा (गुवाहाटी) ने आगामी कार्यकाल के लिए प्राप्त नामांकनपत्रों के आधार पर अध्यक्ष के रूप में श्री ताराचन्द रामपुरिया (सुजानगढ़-कोलकाता) तथा मुख्य न्यासी के रूप में श्री रूपचन्द दूगड़ (बीदासर-मुम्बई) के निर्वाचन की घोषणा की। अन्य न्यासी इस प्रकार निर्वाचित घोषित हुए--श्री मोहनलाल छाजेड़ (बोरावड़), श्री भीखमचन्द पुगलिया (कोलकाता), श्री मदन तातेड़ (मुम्बई), श्री प्यारेलाल पीतलिया (चेन्नई), श्री मूलचन्द नाहर (बेंगलुरु), श्री भागचन्द बरड़िया (लाडनूं), श्री धनपत दूगड़ (कोलकाता) पंच मंडल के सदस्य इस प्रकार हैं--श्री भेरचन्द गोगड़ (पाली), श्री सुरेन्द्र कच्छारा (मुम्बई), श्री प्रकाशचन्द बैद (लाडनूं)।

जयकुंजर सदृश है जैन विश्व भारती

३ सितम्बर के प्रातःकालीन कार्यक्रम में निवर्तमान अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया, नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री ताराचन्द रामपुरिया, प्रधान न्यासी श्री रूपचन्द दूगड़, तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक श्री कन्हैयालाल छाजेड़ एवं समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी ने अपने विचार रखे। श्री रामपुरियाजी ने पूज्यप्रवर के मंगल आशीर्वाद की कामना करते हुए श्री बंशीलाल बैद (छापर) को मंत्री, श्री धर्मीचन्द लूंकड़ (राणावास) व श्री मनोज लूणिया (चाड़वास) को उपाध्यक्ष तथा श्री जीवनमल मालू को सहमंत्री के रूप में नियुक्त करने की घोषणा की। श्री रामपुरियाजी ने अपने सहयोगियों के साथ आचार्यवर से मंगलपाठ का श्रवण किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने जैन विश्वभारती के संदर्भ में कहा--'जैन विश्वभारती विद्या और साधना से जुड़ा हुआ एक महत्त्वपूर्ण संस्थान है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अपने आचार्यकाल में समाज को अनेक-अनेक दृष्टियां दी थी। अनेक संस्थाओं को आगे बढ़ने में उनका आशीर्वाद व दिशादर्शन मिलता रहा। उनके शासनकाल में जैन विश्वभारती जैसी महत्त्वपूर्ण संस्था स्थापित हुई। यह ऐसी संस्था है, जिस पर काफी अंशों में गौरव की अनुभूति की जा सकती है। जैविभा का परिसर सुन्दर बना है। आत्मा महत्त्वपूर्ण

है, पर ज्ञान, ध्यान आदि का माध्यम शरीर है। शरीर के बिना काम कैसे हो सकता है? संस्था के विकास हेतु मैनपावर, मनीपावर, मैनेजमेंटपावर व मोरेलिटीपावर भी होना चाहिए। ये चारों हैं तो संस्था अच्छा विकास कर सकती है। जैन विश्वभारती से संपृक्त संस्था है--जैन विश्वभारती संस्थान- मान्य विश्वविद्यालय। यह भी विद्या से जुड़ा हुआ है।'

आगमों में वर्णित 'जयकुंजर' (हाथी) से जैन विश्वभारती की तुलना करते हुए विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्यप्रवर ने कहा--'जयकुंजर हाथी के सदृश जैन विश्वभारती भी विशाल है। इसमें साधना, सेवा, शिक्षा, साहित्य आदि कितनी ही प्रवृत्तियां चल रही हैं। यह संस्था आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के आशीर्वाद व छत्रछाया में पल्लवित-पुष्पित हुई और विकास के पथ पर अग्रसर हो रही है।'

निवर्तमान अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया के कार्यकाल की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'सुरेन्द्रजी चोरड़िया ने लगभग छह वर्ष तक अध्यक्ष के दायित्व का निर्वहन किया। इनके दो कार्यकाल संपन्न हुए तो मैंने तीसरे कार्यकाल की दृष्टि दी, इस प्रकार छह वर्ष का कार्यकाल इन्हें मिला। सुरेन्द्रजी बुद्धिमान, चिंतनशील व सक्षम हैं। इनके सामने कितनी परिस्थितियां आई होंगी। ये अपना व्यक्तिगत कार्य और व्यवसाय भी संभालते हैं। इतना काम करते हुए इतनी बड़ी संस्था को संभालना कोई कम बात नहीं है। सुरेन्द्रजी दृष्टि व इंगित के अनुरूप चलने वाले विनीत श्रावक हैं। जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय के कुलाधिपति की मैंने दृष्टि दी। इस संदर्भ में बातचीत के प्रसंग में मैंने कहा--'आपको संभालना चाहिए।' मेरी इच्छा व इंगित से चांसलर मनोनीत हुए। फिर मैंने कुछ लोगों के बीच आचार्य तुलसी का अनुकरण (पद विसर्जन) करने को कहा। इन्होंने दृष्टि के अनुरूप शीघ्र त्यागपत्र दे दिया। किसी स्थान पर बैठाने और अधिकार देने के बाद हटाना सामान्य बात नहीं होती। एक अच्छे व्यक्ति को चांसलर बनने का इंगित दिया और उसे ही विसर्जन के लिए कह दिया। मेरे पास इस मुद्दे को लेकर ये एक सेकिंड के लिए भी नहीं आए। इन्होंने विनय, समर्पण, इंगित की आराधना व श्रावकत्व का परिचय दिया। इसके लिए मैं सुरेन्द्रजी को साधुवाद देता हूं। अपने छह वर्षों के कार्यकाल में कितनी बार ये कोलकाता से जैन विश्वभारती आए, कितनी बार यहां आए। आचार्य महाप्रज्ञजी के समय इन्होंने जैन विश्वभारती का अध्यक्षीय दायित्व संभाला। मैंने इन्हें आगे भी संचालन का इंगित दिया।'

कार्यभार संभाल रही नई टीम के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'अब ताराचन्दजी रामपुरिया ने जैन विश्वभारती का अध्यक्षीय दायित्व संभाला है। इनके पिता श्रीचन्दजी आचार्यों से कितनी विनम्रता से बात करते थे। वे अध्ययनशील थे। उन्होंने आचार्य भिक्षुकृत 'नव पदार्थ सद्भाव' ग्रंथ विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया। तेरापंथ दर्शन, गांधी दर्शन के वे अच्छे ज्ञाता थे। ताराचन्दजी को भी वर्षों से देख रहा हूं, अच्छे वेल एजुकेटेड व्यक्ति हैं, प्रौढ़ व शान्त स्वभावी हैं। जैविभा से वर्षों से जुड़े हुए हैं। रूपचन्दजी दूगड़ पहले लम्बी सेवा करते थे। अच्छे श्रावक कार्यकर्ता हैं। ये चीफ ट्रस्टी बने हैं। बंशीलालजी बैद मंत्री बने हैं। छापर के पुराने श्रावक हैं। छापर मर्यादा महोत्सव व अन्य अवसर पर अपनी सेवाएं दी हैं। जैन विश्वभारती से वर्षों तक संपृक्त रहे हैं। तेरापंथ से संबद्ध संस्थाओं में पारदर्शिता हो, पदाधिकारी निर्मल चरित्र वाले हों। इससे संस्था सुशोभित होती है और अच्छी संस्था से व्यक्ति शोभित होते हैं। पूरी टीम पवित्र आध्यात्मिक कार्य के संपादन में निष्ठाशील बनी रहे।'

'जैन विश्वभारती इतिहास' कृति के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'यह पुस्तक सामने आई है। इसमें जैन विश्वभारती का इतिहास संदृब्ध है। आचार्य महाप्रज्ञजी के इंगित से मुनि मोहजीतकुमारजी ने यह कार्य प्रारंभ किया। उन्होंने इस ग्रंथ के संकलन एवं संपादन में अच्छा श्रम किया है। इस ग्रंथ को पढ़ने से जैन विश्वभारती के बारे में जानकारी मिल सकेगी।'

जीवन विज्ञान दिवस

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत जीवनविज्ञान दिवस का समायोजन। इस संदर्भ में परम श्रद्धेय

आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'जीवनविज्ञान का उपक्रम मुख्यतयः शिक्षा जगत के लिए है। जीवन विज्ञान से विद्यार्थियों का भावात्मक विकास हो और विद्यार्थी चरित्रवान बनें। विद्या के साथ विनय की युति होने से व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व प्रखर बन सकता है। जीवन विज्ञान से शिक्षा जगत का कल्याण हो।' आज के इस कार्यक्रम में उपस्थित सैकड़ों विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। चूरू से समागत पचास भाई-बहनों के संघ की ओर से गीत के माध्यम से चूरू पधारने की प्रार्थना पूज्यचरणों में प्रस्तुत की गई। आज से पूर्वजन्म अनुभूति शिविर का प्रारंभ हुआ।

अणुव्रत की आत्मा है संयम

४ सितम्बर। अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अन्तर्गत अणुव्रत प्रेरणा दिवस का आयोजन। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अणुव्रत की आत्मा है संयम। संयम के बिना अणुव्रत का अस्तित्त्व नहीं है। जिसका संकल्प दृढ़ होता है, वह अणुव्रत की आराधना कर सकता है। त्याग का सुख महान होता है। रागयुक्त जीवन में त्याग का अभ्यास करना चाहिए। अणुव्रत पवित्र संकल्पों का एक प्रयोग है। गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी सामने है। उस संदर्भ में दो प्रमुख कार्य हैं--महाव्रत और अणुव्रत का स्वीकरण। अणुव्रती बनने के लिए तेरापंथी होना व आचार्य महाश्रमण को गुरु मानना जरूरी नहीं है। जैन-जैनेतर कोई भी अणुव्रती बन सकता है। विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों के लिए अणुव्रत के अलग-अलग वर्गीय नियम हैं। संकल्पित होकर व्यक्ति उन नियमों को स्वीकारे, यह अपेक्षित है।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। मुनि मदनकुमारजी ने निर्धारित विषय पर अपने विचार रखे। चेन्नई सभा के अध्यक्ष श्री जयंतीलाल सुराणा ने अपने विचार रखे। कटक से समागत एक सौ पन्द्रह व्यक्तियों के संघ की ओर से गीत प्रस्तुत करते हुए कटक में सन् २०१८ के मर्यादा महोत्सव हेतु पुरजोर निवेदन किया गया। सूरत महिला मंडल का एक सौ इक्कीस बहिनों का संघ अध्यक्षा श्रीमती मधु देरासरिया के नेतृत्व में गुरु दर्शनार्थ पहुंचा। कार्यक्रम में बहनों ने गीत के माध्यम से अपनी भावनाएं रखीं। मंडल की पचास बहनों द्वारा भरे गए बारहव्रत स्वीकरण के संकल्पपत्र, डेढ़ सौ बहनों द्वारा भरे गए प्रतिक्रमण कंठस्थ के संकल्पपत्र, चालीस बहनों द्वारा भरे गए दस प्रत्याख्यान संकल्प तथा अन्य विविध संकल्पपत्र पूज्यवर को समर्पित किए गए। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

प्रतियोगिता सप्ताह का समायोजन

परमपूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में रात्रिकालीन कार्यक्रम के दौरान आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति द्वारा २५ अगस्त से प्रतियोगिता सप्ताह समायोजित हुआ। इसके अन्तर्गत क्रमशः संगीत प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, अन्त्याक्षरी, किसमें कितना है ज्ञान, वाद-विवाद प्रतियोगिता, ज्ञानशाला प्रस्तुति, प्रश्नमंच आदि उपक्रम समायोजित हुए। ३ सितम्बर की रात्रि में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता की सफलता में मुनि जिनेशकुमारजी और मुनि परमानंदजी का श्रम रहा। संपूर्ण समायोजना में स्थानीय तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्यामंडल का सहयोग उल्लेखनीय रहा।

स्मृति-संबल

- तारानगर निवासी श्री मांगीलाल सुराना का निधन हो गया। वे साध्वी कीर्तिश्रीजी के संसारपक्षीय भाई थे। श्री सुराना धर्मसंघ की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। पिछले पच्चीस वर्षों से गुरु दर्शन का क्रम अनवरत चल रहा था। पूरा सुराना परिवार संस्कारी है।
- भिवानी निवासी श्री ओमप्रकाश जैन का देहान्त हो गया। वे प्रसिद्ध परसराम जुगलकिशोर जैन परिवार के सदस्य और एक धर्मनिष्ठ श्रावक थे।

- राजनगर निवासी श्रीमती कांता बड़ोला (धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्रकुमार बड़ोला) का असाध्य बीमारी में देहावसान हो गया। वह समाजभूषण श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट की सुपुत्री व श्री गुणसागर एवं डॉ. महेन्द्र कर्णावट की भगिनी थी। सन् १९६२ में नयामोड़ आचार संहिता के अनुरूप पर्दारहित व आडंबर रहित विवाह किया। घर हाइवे पर होने से साधु-साध्वियों के चरण स्पर्श का लाभ बड़ोला परिवार को मिलता रहता था। कांतादेवी भक्तिमान, सरल, शांत व धर्मनिष्ठ श्राविका थी।
- जोबनेर जयपुर निवासी श्री धनराज बरड़िया का निधन हो गया। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के वर्षों तक संयोजक रहे श्री कल्याणमलजी बरड़िया के संस्कारों का प्रभाव धनराजजी पर रहा। धनराजजी ने धार्मिक व सात्विक जीवन जीया। आचार्यों के कृपापात्र रहे बरड़ियाजी का पूरा परिवार व्यसन मुक्त है। पूरा परिवार संस्कारी है।
- श्रीडूंगरगढ़ निवासी जयपुर प्रवासी श्रीमती निर्मला देवी पुगलिया (धर्मपत्नी श्री भीखमचन्द पुगलिया) का कैंसर जैसी असाध्य बीमारी में देहावसान हो गया। निर्मलादेवी के मन में धर्म के प्रति गहरी भावना थी। श्रीडूंगरगढ़ का पुगलिया परिवार श्रद्धाशील व सेवाभावी परिवार है। परिवार के सदस्य धनराजजी, भीखमचन्दजी, हेमराज, विकास, सुबोध आदि संघ सेवा में जुड़े हुए है। सामाजिक दृष्टि से एक विशिष्ट बात यह कि उनकी इच्छा के अनुरूप मृत्यु के उपरांत जयपुर के एस. एम. एस. मेडिकल कॉलेज में देहदान किया गया।

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह : निर्धारित परियोजनाएं-५

- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के संपूर्ण समायोजन हेतु जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा 'आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह समिति' का गठन किया जा रहा है।
- तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह समिति के पदेन संयोजक रहेंगे।
- समारोह समिति के अंतर्गत संरक्षक समिति, परामर्शक समिति, कार्यसमिति और स्वागत समिति नामक चार समितियां गठित की जाएंगी।
- आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी के संदर्भ में गुरुकुलवास में समायोजित होने वाले कार्यक्रम शताब्दी समारोह समिति के द्वारा आयोजित होंगे।
- शताब्दी समारोह के संदर्भ में स्थानीय स्तर पर समायोज्य कार्यक्रमों का दायित्व स्थानीय तेरापंथी सभा का रहेगा।
- स्थानीय स्तर पर आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी के संदर्भ में समायोजित होने वाले कार्यक्रमों के कॉर्ड, पोस्टर, बैनर आदि में आचार्य तुलसी शताब्दी समारोह का उल्लेख व प्रतीकचिह्न रहे। अन्य कोई प्रतीकचिह्न उसमें न रहे।

परम श्रद्धेय आचार्यवर द्वारा प्रदत्त चतुर्मास पश्चात्कालीन निर्देश

निम्नांकित सिंघाड़े दर्शन करें--

मुनि दर्शनकुमारजी, मुनि धर्मेशकुमारजी, साध्वी अशोकश्रीजी, साध्वी सत्यप्रभाजी, साध्वी अमितप्रभाजी, साध्वी राकेशकुमारीजी, साध्वी अर्हतप्रभाजी, साध्वी सम्यक्प्रभाजी, साध्वी हेमलताजी, साध्वी लब्धिप्रभाजी

- विशेष निर्देश के सिवाय शेष सभी सिंघाड़े अपने-अपने चोखलों/क्षेत्रों में विहरण करें।
- विशेष निर्देश के सिवाय समणश्रेणी के सदस्य जनवरी के तीसरे सप्ताह में दर्शन करें।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- सुपौत्र चि. प्रतीक (सुपुत्र-प्रमोद-कल्पना दूगड़), सुपौत्री नाजुक दूगड़ (सुपुत्री प्रसन्न-राजश्री

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

दूगड़) एवं दौहित्र निखिल बोथरा (सुपुत्र लक्ष्मीपत-सुमन बोथरा) की सगाई के उपलक्ष्य में श्रीमती झणकारदेवी-पूनमचन्दजी दूगड़-सरदारशहर-कोलकाता द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. श्रीमती सोसरबाई चंडालिया (धर्मपत्नी-स्व. पन्नालालजी चंडालिया, पड़ासली-मुम्बई) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू भीमराज-सुशीला, संपतलाल-दाखबाई, बाबूलाल-कमलाबाई, पारसमल-निर्मला, नानालाल-उषा, सुरेश-कुसुम एवं पौत्र-पौत्रियों द्वारा प्रदत्त।

३१००/- चि. अंकुर-प्रशम बाफना (सुपौत्र एवं पौत्रवधू-श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. फूलचन्दजी-पानीबाई बाफना, भाणावाले, सुपुत्र व पुत्रवधू सुरेश-इन्द्रा बाफना) के शुभ विवाहोपलक्ष्य में सुश्री अंकिता एवं बाफना परिवार, मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती सुनीता सेठिया (धर्मपत्नी-श्री राजेन्द्र सेठिया, सुपुत्री-श्री मूलचन्दजी-विमला सेठिया) द्वारा जोधपुर यूनिवर्सिटी से पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त करने के उपलक्ष्य में श्रीमती सुखीदेवी पूनमचन्दजी सेठिया, जितेन्द्र, राज, राहुल, अमृता, रक्षिता, आकांक्षा, इरा सेठिया, सरदारशहर-कोलकाता द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती शान्तिदेवी पारसमल बोथरा (बोरावड़-मुम्बई) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र विजयकुमार, संजय, सुपौत्र अंकित, आदित्य एवं श्रेयांस बोथरा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री मूलचन्द बरलोटा, रेखा एम., रेखा ए., श्री अशोक एवं श्रीमती हुलास की विविध तपस्याओं के उपलक्ष्य में श्री ताराचन्द चुन्नीलालजी बरलोटा, काराड़ी, द्वारा-स्वागत मेडीकॉर्नर, भुलेश्वर-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

ज्ञातव्य :- विज्ञप्ति क्रमांक २२ में पृष्ठ ६ पर उल्लिखित मिठाई की निर्धारित परिभाषा के अंतर्गत 'नोट' का (ग) बिन्दु साधु-साध्वियों के लिए ही है।

सुधार कर पढ़ें- अंक २१ के पृष्ठ ६ पर प्रकाशित पर्युषण यात्रा की सूची के अंतर्गत सेण्डियागो, सेक्रामेंटो व इंडोनेशिया जानेवाली समणीवृन्द दूसरे भाद्रपद में अन्य जैन समुदाय के बीच पर्युषणाराधना कराने हेतु जाएंगी। मुमुक्षुवृन्द की पर्युषण यात्रा के अंतर्गत इस प्रकार पढ़ा जाए--

जलगांव- मुमुक्षु ममता, मुमुक्षु ललिता बी., मुमुक्षु भाग्यश्री।

अंकलेश्वर-भरूंच- मुमुक्षु गुणश्री, मुमुक्षु भावना एम., मुमुक्षु रजनी, मुमुक्षु प्रांजल।

जबलपुर- मुमुक्षु ममता, मुमुक्षु प्रकाश, मुमुक्षु मीनाक्षी।

साध्वी चान्दाजी (श्रीडूंगरगढ़) कालधर्म को संप्राप्त

१ सितम्बर। हरियाणा के आर्यनगर-हिसार में प्रवासित साध्वी मोहनांजी (श्रीडूंगरगढ़) की सहवर्तिनी साध्वी चान्दांजी कालधर्म को संप्राप्त हो गईं। उनके विषय में पूज्यवर के उद्‌गार पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

श्रेणी आरोहण का आदेश

६ सितंबर। परमपूज्य आचार्यवर ने समणी ज्ञानप्रज्ञाजी को ५ नवंबर को जसोल में समायोज्य दीक्षा समारोह के लिए श्रेणी आरोहण का आदेश प्रदान किया है।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति,
पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ६६८००५५३८१, ६३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

प्रकाशन दिनांक : ८-६-२०१२

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**